रात्री क्लास　　　　　　　　　　ओम्शान्ति　　　　　　　　　　24-10-67

बच्चों की दिल होगी हम जल्दी जाये पहुँचें। घर को पहुँचना है। तुम बच्चों को भी जरूर होता होगा। सुखधाम जाये पहुँचें। तो सब दुःखों से दूर हो जाये। वहाँ बेकायदे कोई काम नहीं होगा। यहाँ हर चीज़ के लिए मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ मेहनत नहीं। यहाँ तूफान पानी आदि होने से चीज़ खराब हो जाती है। वहाँ यह बात नहीं। नाम ही सुखधाम। बाप तसली देते हैं धीर्य धरो। बाकि थोड़ा टाईम है। तीर्थ यात्रा पर थक जाते हैं तो पण्डा आयत देते हैं। मीठे2 बच्चों की यह मुसाफिरी है। इस पार से उस पार जाने की। समझ में आता है पुरानी दुनिया से नई दुनिया तरफ जा रहे हैं। सिर्फ पुरुषार्थ करना है। ऊंच पद पाने। इसके लिए है याद की यात्रा। जो बाप कहते हैं मैं आये सिखलाता हूं। और कोई सिखलाये न सके। इस यात्रा से पतित दुनिया पावन बन जाती है। तुम्हारी बुद्धि में है एक बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तुम बाप और चक्र को जान गये हो। तसला होती है। दुनिया में और कोई नहीं समझते। विरला समझते हैं और कशिश होती है बाप पास जाने की। जितना2 याद करेंगे उतना पवित्र बन जावेंगे। और शिव बाबा की कशिश होगी। इनके लिए कशिश नहीं होती। कशिश होनी है शिव बाबा की। यह है नई इनवेन्शन। रचता ही निकलेंगे ना। पुरानी दुनिया को बदल नया बनाना है। लायक बनना है निर्वाणधाम सुखधाम जाने लिए। यथार्थ रीति से समझना है। यह कोई बात क्या नहीं है। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो बेहद के बाप से बेहद के सुख का वर्सा लेने। बाप को याद करने से ही पावन बनेंगे। तुम ने ही कल्प2 बेहद के बाप से सुख का वर्सा पाया है। तुम जानते हो इतने जन्म सुख, इतने जन्म दुःख भोगा है। बाप ने स्मृति दिलाई है। इस स्मृति में रहना होता है। जब तक वह समय विनाश का आ जाये। सभी मनुष्य कहते हैं भावी प्रबल है। तुम जानते हो क्या होने का है। तुम भी कब कब ड्रामा को भूल जाते हो। चिन्तन करते हो। किसको जास्ती किसका कम चिन्तन चलता है। देखा जाता है चिन्तन बिलकुल ही बंद हो जाये। कोई भी फिकरात न हो। यह होता नहीं है। फिकरात से पारग होंगे। परन्तु अन्त में। इस समय हो न सके। विवेक कहने न देंगे। बाकि यह जरूर है बच्चे पढ़ते हैं पढ़ाई पर निश्चय हो बाप पढ़ा रहे हैं तो यह याद स्थाई रहे तो खुशी का पारा भी चढ़े। नीचे उपर होते ही हैं। इसमें कोई बात में मूंझने की दरकार नहीं। तुम सब हो पेसेन्ट, एक डाक्टर के। पेसेन्ट को भी कोई बीमारी होगी तो याद पड़ेगा फैमली सर्जन। यह है ईश्वरीय फैमली। ईश्वर है अविनाशी सर्जन। जिसमानी बिमारी की बात नहीं। बाप तो एक ही दवाई देंगे याद की यात्रा में रहो। कर के संदेशी को बाबा पास भेजा जाता है। ड्रामा में जो है वह होता है। दवाई लगे न लगे कुछ कह नहीं सकते। बच्चों को एम आबजेक्ट तो दे दी है। यह बनना है। दैवी गुण धारण करना है। कोई को दुःख न देना है। न अपन को दुःख में लाना है। याद है ही सेफ्टी फर्स्ट। याद और पवित्रता। दो है मुख्य। जितना याद करेंगे और दूसरों को रास्ता बतावेंगे पद पावेंगे। पदमापदम भाग्यशाली तुम हो ना। आगे चल जितना प्रभाव पड़ता जावेगा बहुत आवेंगे। हार्ट फेल न होना है। बाप वन्डर फुल नाले ज देते हैं तो तुम क्या बन जाते हो। कितना वन्डर-फुल वर्सा मिलता है। अथाह सुख बाप से मिलती है। बच्चे समझते हैं कि बाप से ऐसा वर्सा मिलता है जो अनगिनत धन हो जाता है। गिनती की बात नहीं। बाकि थोड़े राज़ हैं राज्य मिला कि मिला। आत्मा ही शरीर के साथ क्या2 करता है। ऐसा कोई थोड़े ही समझेंगे मैं आत्मा यह करता हूं। मैं आत्मा इस शरीर द्वारा बाप से पढ़ रहा हूं। बड़ी2 अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इस में मेहनत है। अभी तुम डबल युद्ध पर हो। योद्धा तो हो ना। वारियर्स हो। तुम डबल अहिंसक हो। बच्चों को सा0 भी कराया है कैसे तुम्हारी रक्षा होती है अगर शिव बाबा की याद में रहते हो। याद की यात्रा ही काम आती है। याद है मुख्य। सारे ज्ञान का सार है मनमनाभव। मूल बात की याद को भूलो मत। यहाँ आकर बैठते हो तो बाप की डैरेक्शन अमल में लानी है। इसमें माया की युद्ध चलती है। कड़े2 तूफान आवेंगे। जितना रूस्तम बनेंगे उतना माया के तूफान आवेंगे। बाबा ने बार बार समझाया है पहले2 तुम्हारी जीत होनी है गीता का भगवान

कौन? सिद्ध आरग्यु कर न सकेंगे। बाप है ही सत्य। हमको जो समझाया है चित्र निकलवाया है। सब राईट्स हैं। इसमें मूंझने की दरकार नहीं। तुमको कहते हैं इनको ब्रह्मा क्यों कहते हो। और हम ब्रह्माकुमारियाँ आप के सामने खड़े हैं, हमारा यह बाबा है। हम उनके बच्चे हैं। तुम्हारे कहने से थोड़ा होंगा। ढेर बच्चे हैं। तुमको खुश करने लिए क्या निकाल देवें। ब्रह्माकुमारियाँ कहाँ से निकली। तुम सभी ब्रह्मा के बच्चे हो। समझ कर और फिर बनते जाते हैं। बनते भी हैं शिव बाबा को। शिव बाबा इन द्वारा शिक्षा देते हैं। जरूर मनुष्य मानना पड़ेगा। विवेक कहते हैं याद की यात्रा में रहने से आयु बढ़ती जरूर है। अगर मर पड़ते हैं तो जरूर याद की यात्रा कम है। जिस कारण आयु बढ़ न सकता। तुमको ध्यान रहता है मामा पर। सरस्वती और तुम्हारे में क्या फर्क है। यह तो सिर्फ निमित बनाया जाता है। बच्चों का काम है याद में रहना। और कोई संशय में आना नुकसान कारी है। धक्के में रहने से कम पद पावेंगे। जो होगा ड्रामा अनुसार। मूंझने की दरकार ही नहीं। भावी प्रबल है। भावी ड्रामा को कहा जाता है। अच्छा बच्चों को गुड नाईट।

रही हुई पाईन्ट्स:- * गीता का भगवान कौन? समझानी तो बहुत इजी है। गीता तो भगवान ने सुनाई और राजाओं का राजा बनाया था। फिर जब वह आवे तब ही बनावेंगा। बाकि यह सब वेद सुनते हैं। सत्य-नारायण की कथा करते हैं ना। उनसे कुछ होता नहीं है। अमर नाथ ने तो अमर कथा सुनाई थी। तब अमरपुरी के मालिक बने थे। बाकि यह कथायें आद पढ़ने सुनने से कुछ मिलता थोड़े ही है। अभी तुम समझते हम कितने बेसमझ थे। तुम बच्चों को सदैव खुश हर्षित मुख रहना है। तुम बहुत स्वीट चिल्ड्रेन हो। बाप 5000 वर्ष बाद ही आये बच्चों से मिलते हैं। तो जरूर खुशी होंगी ना। हम फिर से आये हैं बच्चों से मिलने।

हर एक अपने अंदर में समझ सकते हैं, [illegible] बाबा से चमाट खाता है। बाबा क्रोध में आ गये हैं। पत्नी को मार डाला। यह भूल हुई। बाप समझाते हैं जितना हो सके कन्ट्रोल करो। जंगली मनुष्य हैं। अबलाओं पर कितनी अत्याचार होती है। स्त्री अबला होती है। बाप फिर तुमको यह गुप्त लड़ाई सिखलाते हैं। जिस से तुम रावण पर जीत पहनते हो। यह लड़ाई कोई के बुधि में नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो समझाते हैं। यह है बिलकुल नई बात। और तो सभी आधार हैं शास्त्रों पर। बाप कहते हैं यह जो सभी कर्मकाण्ड हैं सब हैं भक्ति मार्ग। अभी तुमको यह मालूम पड़ता है कि भक्ति मार्ग कब शुरू होता है, कब पूरा होता है। अब फिर ज्ञान मार्ग चलना है। हम अपने घर जावेंगे। फिर आकर नई दुनिया में बेहद का वर्सा पावेंगे। अभी हम पढ़ रहे हैं सुखधाम के लिए। यह भी अभी ही याद है फिर हम भूल जावेंगे। मूल बात है ही याद की यात्रा की। याद से पावन बन जावेंगे। *

प्रदर्शनी में तुम समझाते हो, अगर निश्चय बुधि हो जावे तो फट से लिखें बाबा आप तो बरोबर सागर तन में आते हो। हम ब्रह्माकुमार बने थे आप से वर्सा लेने। बाबा बस अभी हम जाना कि आया। बच्चें समझते नहीं है। अगर बाप को पहचाना है तो जो ऊंच ते ऊंच भगवान है उनके बनो ना, उनसे पढ़ो ना, उनको अपना गुरु बनाओं। नहीं तो गति सदगति कैसे होंगी। शरीर छूट जावे तो दुर्गति को पावेंगे। समझानी ऐसी देनी चाहिए जो फटाट ही खुल जावे। *

तुम क्लियर कर लिखते हो द्वापर से भक्ति अर्थात दुर्गति मार्ग शुरु होता है। पहले 2 होती है सतोप्रधान भक्ति। फिर व्यभिचारी भक्ति शुरु होती है। दुर्गति होती है। उतरती कला होती है। चढ़ती कला और उतरती कला का भी अर्थ चाहिए ना। चढ़ती कला करने वाला एक ही बाप है। उतरती कला में रावण ले जाते हैं। यह है ही राम रावण राज्य। अपने में जो अवगुण है वह भी निकालनी चाहिए। चार्ट में सब नोट करना चाहिए। बहुत हैं जो सच कभु न लिखेंगे। समझेंगे बाबा क्या कहेंगे। मुरली में कहेंगे इसलिए लिखते ही नहीं। डायरी पाकेट में रहे। रात को बैठ सारा दिन का पोतामेल निकालना चाहिए। तब कुछ उन्नति हो सके। अच्छा ओम।